पराशक्ति के अन्तर्गत आ जाय। वे पराशक्ति में उसके वापस लौटने के लिए नित्य उत्कण्ठित रहते हैं; किन्तु अपनी अणु-मात्र स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करता हुआ जीव आध्यात्मिक प्रकाश के संग का निरन्तर तिरस्कार किया करता है। स्वतन्त्रता का यह दुरुपयोग ही भवबन्धन से होने वाले सम्पूर्ण दुःख का कारण है। इसलिए श्रीभगवान् भीतर और बाहर से भी जीव को नित्यनिरन्तर सदुपदेश देते रहते हैं। बाहर से वे भगवद्गीता के रूप में शिक्षा देते हैं और भीतर से जीव को यह विश्वास कराने का प्रयास करते हैं कि लौकिक क्षेत्र में वह जो कुछ करता है, उससे सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। वे कहते हैं, "इस सब अनर्थ को त्याग कर अपने सम्पूर्ण श्रद्धा-विश्वास को मुझ में केन्द्रित कर दे। तभी तू वास्तव में सुखी हो सकेगा।" अतएव परमात्मा अथवा श्रीभगवान् में जिसका विश्वास है, ऐसा विवेकी पुरुष सच्चिदानन्दघन जीवन की ओर द्रुतगति से बढ़ता है।

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते।।२४।।

यः=जो; **एवम्**=इस प्रकार; **वेत्ति**=जानता है; **पुरुषम्**=जीवात्मा; **प्रकृतिम्**=प्रकृति को; **च**=तथा; **गुणैः सह**=प्रकृति के गुणों सहित; **सर्वथा**=सब प्रकार से; **वर्तमानः**=स्थित हुआ; **अपि**=भी; **न**=नहीं; **सः**=वह; **भूयः**=पुनः; **अभिजायते**=जन्म लेता।

अनुवाद

इस प्रकार जो जीवात्मा और गुणों सहित प्रकृति के तत्त्व को जानता है, उसकी मुक्ति निश्चित है। वह वर्तमान में किसी भी स्थिति में हो, परन्तु उसका पुनर्जन्म नहीं होता।।२४।।

तात्पर्य

प्रकृति (माया), परमात्मा, जीवात्मा और इन तीनों के परस्पर सम्बन्ध का विमल ज्ञान मुक्ति और आध्यात्मिक परिवेश की प्राप्ति की योग्यता प्रदान करता है। उस अवस्था में प्रकृति में आवागमन का भय नहीं रहता। यह ज्ञान का फल है। ज्ञान का प्रयोजन यह निश्चित रूप से जान लेना है कि जीवात्मा किसी कारणवश इस भवबन्धन में पतित हो गया है। प्रामाणिक सन्तपुरुषों और गुरुदेव के सत्संग में निजी प्रयास करते हुए अपने सच्चे स्वरूप को समझना है और श्रीभगवान् के कहे अनुसार भगवद्गीता को आत्मसात् कर के अपने सनातन धर्म—कृष्णभावना में फिर परिनिष्ठित होना है। ऐसी स्थिति में निस्सन्देह इस भवसागर में उसका फिर कभी आगमन नहीं होगा; वैकुण्ठ-जगत् में प्रविष्ट होकर वह पुरुष सच्चिदानन्दमय जीवन प्राप्त कर लेगा।

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे।।२५।।